ISSN 2249-894X VOL. 4 | ISSUE. 6 | MARCH 2015

REVIEW OF RESEARCH

पितृसत्ता एवं भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति

गोविन्द सोनकर

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.

सारांश

इस शोध आलेख–पत्रा का आधर भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति के विषय में संक्षिप्त जानकारी प्रदान करने से है। आधुनिक संचार के माध्यमों का महिलाओं के उफपर किस प्रकार का प्रभाव पड़ा है? उसके उफपर भी प्रकाश डाला गया है। साथ ही साथ पितृसत्तात्मक समाज के उफपर भी पफोकस किया गया है।

संकेत–शब्दः–पितृसत्ता, नारीवाद, पूँजीवाद, आंदोलन, आरक्षण, असमानता, लोकतंत्रा इत्यादि।

प्रस्तावना

प्राचीन समय से लेकर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो भारतीय समाज एक पुरूष–प्रधन समाज रहा है। यहाँ पर पुरूषों को महिलाओं की तुलना में विशेष अधिकार प्रदान किये गये है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था के अन्तर्गत भारतीय समाज में पुरूषों को महिलाओं की तुलना में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धर्मिक रूप से श्रेष्ठता प्रदान की गयी है। अल्पाहारी शब्दों में कहें तो फ्पुरूषों का स्त्रियों के उफपर वर्चस्व रहा है।य् परन्तु सबसे मूलभूत प्रश्न यह उठता है कि वर्तमान परिदृश्य में पुरूष एवं महिला के मध्य जो गलाकाट असमानताऐं पूर्व एवं पश्चिम में देखने को मिलती है, क्या वह नैसर्गिक है? क्या प्रकृति ने खुद उसे बनाया है? जब हम इन सभी प्रश्नों के उत्तर के तहखाने में जाते है तो यह पाते है कि प्रकृति ने इसे नहीं बनाया है बल्कि पुरूषों ने स्वयं समाज में इसको अमली जामा पहनाया है।

धर्म, नैतिकता, परिवार, संस्कृति, रूढ़िवादी परपरा, सामाजिक मूल्यों, एथिक्स एवं शक्ति संरचना के आधर पर मन–गढंत कहानियाँ बनाकर स्त्रियों को विवशता की बेड़ियों में जकड़ कर रख दिया गया है। मिसाल के तौर पर पुरूष अपने बु(ि कौशल एवं ज्ञान के माध्यम से जमीन पर रेगने वाले जीव–जन्तुओं से लेकर ब्रह्माण्ड में घटित होने वाली घटनाओं के उफपर विजय प्राप्त करने में सपफलता अर्जित की है। खूँखार एवं आदमखोर जानवरों से लेकर सृष्टि की सारी चीजों पर अपना एकाध्किार जमाने में सपफल रहा है। इसी तरह से स्त्री को भी अपना दास बनाने में जिस घिसी–पिटी तकनीकी एवं आधुनिक तंत्रा–मंत्रा का सहारा लिया है, वह मात्रा कुछ भी नहीं बल्कि पितृसत्तात्मक–व्यवस्था है, जो स्त्री के तन–मन में घोल बनाकर उड़ेल दिया गया है। जिसे आजकल की दुर्बल एवं मात्राकुछ सबल नारी न तो इस विषैले जहर को पचा पा रही है और ना ही इस पितृसत्तात्मक संरचना की जंजीरों से निकल पा रही है। समाज, कार्य–स्थल, परिवार, सार्वजनिक एवं निजी स्थानों पर महिलाओं के साथ हो रहे दमन, शोषण, उत्पीड़न एवं भेदभाव तो एक आम बात बनकर रह गयी है।

पितृसत्ता का अर्थ : (MEANING OF PATRIARCHY)

पितृसत्ता के सन्दर्भ में कमला भसीन का कहना है कि – फपितृसत्ता, शक्ति के उन रिश्तों को दर्शाती है जिनके माध्यम से पुरूषों का स्त्री पर वर्चस्व स्थापित होता है।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने श्रम को इस प्रकार से विभाजित कर दिया है कि आज नारी केवल घरों की दीवारों में सिमटी रह गयी है। घरेलू काम–काज के साथ–साथ बच्चे का पालन–पोषण करने की जिम्मेदारी भी उन्हीं के हाथों पर छोड़ दिया गया है। जबकि स्त्री–पुरूष के आपसी सहमति से ही बच्चे का जन्म होता है। नारीवादी विचारधरा के सर्मथक स्त्रियों के साथ होने वाले इस प्रकार के भेदभाव, घरेलू हिंसा एवं शोषण के खिलापफ समानता के अध्किारों की माँग कर रहे है।

पितृसत्ता शब्द की उत्पत्ति फ्पेट्रिआर्क्य शब्द से हुआ है, जिसका अर्थ फ्प्राध्र्मिाध्यक्षय् होता है। यह पद–श्रेणी व्यवस्था पर आधरित कुछ चर्च के बिशपों में से उच्च पद पर आसीन किसी खास–बिशप के लिए प्रयुक्त होता है। इस तरह यहाँ पेट्रिआर्क शब्द उसके पद या प्राध्किार को व्यक्त करता है।

नारीवाद का इतिहास (HISTORY OF FEMINISM)

यद्यपि नारीवाद एक विचारधरा है, जो कि बहुत ही विवादास्पद विषय है। क्योंकि प्राचीन समय में भारतीय नारियों के सन्दर्भ में किसी भी तरह के इतिहास का अवलोकन देखने को नहीं मिलता है। इसके सन्दर्भ में गर्दालर्नर का कहना है कि फस्त्री के अनवरत दमन, शोषण का एक कारण स्त्री का इतिहास न होना, उसके अपने नायकों का नही होना आदि बताती है।

भारतीय समाज में जब हम महिलाओं की स्थिति के उफपर विचार करते है तो पाते है कि भारतीय समाज में भी अनेको तरह बुराईयाँ एवं कुरितियाँ प्रचलन में थी। उदाहरण के रूप में सतीप्रथा, बाल–विवाह, बहु–विवाह, देवदासी प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, पर्दा–प्रथा, दहेज इत्यादि समस्याओं से बुरी तरह से ग्रसित था। इन सामाजिक बुराईयों को जड़ से समाप्त करने हेतु अनेक महापुरूषों जैसेः– राजाराम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, दयानन्द सरस्वती, महादेव गोविन्द रानाडे, पंडित रमाबाई, श्रीमति एनीबेसेन्ट, स्वामी विवेकानन्द, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, लार्ड विलियम बैण्टिक इत्यादि ने अपना उल्लेखनीय योगदान दिया है।

वास्तविकता यह भी है कि सम्पूर्ण संसार में फसंस्कृति एवं सभ्यताय् के विकास का इतिहास भी महिलाओं के दमन, शोषण, घरेलू हिंसा, बलात्कार एवं उत्पीड़न का इतिहास रहा है। यही कारण है कि वर्तमान समय में महिलाओं के साथ हो रहे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धर्मिक आधर पर भेदभाव का यह दस्तूर आज भी जारी है। सार्वजनिक एवं निजी स्थानों पर शारीरिक एवं मानसिक रूप से उत्पीड़न की घटना दिन–प्रतिदिन सुनने को मिलती है। बच्चे के लालन–पालन, सेक्स एवं जेण्डर के आधर पर हो रहे भेदभाव का सिलसिला रूकने का नाम ही नहीं ले रहा है। नारीवादी विचारधरा के सर्मथक समाज में महिलाओं के साथ हो रहे असमानता के व्यवहार को जड़ से समाप्त करने एवं पुरूषों के समान अध्किारों की वकालत करते है। उनका यह भी कहना है कि ये असमानताऐं जो समाज में पफैली हुयी है, वह न ही प्राकृतिक है और न ही नैसर्गिक है। विश्व में ऐसे ही पुरूष एवं स्त्री नारीवादी कहलाने का अध्किार रखते है जो स्त्री के लिए समानता एवं स्वतंत्राता के अध्किारों का पुरजोर सर्मथन करते हो। स्त्रियों के खिलापफ समाज में पफैली कुरीतियों को समाप्त करके एक समतामूलक समाज का गठन किया जाना चाहिए। पोस्ट पफेमिनिज्म विचारधरा के सर्मथक स्त्री एवं पुरूष के समान अध्किारों की बात तो करते है परन्तु स्त्री के उफपर पुरूष के वर्चस्व का विरोध् करते है। समाज में महिलाओं को नीचा दिखाने में आधुनिक युग के तकनीकी संसाध्नों ने भी अपनी महत्ती भूमिका अदा किया है। एक तरपफ जहाँ कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट पर अश्लील विडियो, पोर्नोग्रापफी, माडलिंग, पिफल्मों में अश्लील चल–चित्रा, किसी भी प्रोडक्ट को बेचने हेतु महिलाओं को कम कपड़े में प्रस्तुत करने का चलन इस वैश्वीकरण के दौर में तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है। वही दूसरी तरपफ

अश्लील साहित्य एवं उपन्यासों में भी महिलाओं की दयनीय स्थिति किसी से छिपी नहीं है। रेडियों एवं एपफ.एम. चैनलों पर उत्तेजक एवं भड़काउफ संवाद व गीत भी इसके लिए जिम्मेदार है।

पूर्व एवं पश्चिम के प्राचीन धर्मिक–ग्रंथों मनुस्मृति एवं बाईबिल में स्त्रियों के साथ किये जाने वाले अमानवीय व्यवहार के उफपर पफोकस करता है। जहाँ मनुस्मृति में सभी जातियों के स्त्रियों को शिक्षा एवं सम्पत्ति के अधिकार से वंचित कर दिया गया था। वहीं बाइबिल में पश्चिम की महिलाओं को पुरूषों के प्रति पूरी तरह से समर्पित दिखाया गया है।

समाज में महिलाओं को इस दुखद एवं दयनीय स्थिति से निजात दिलाने में युनाईटेड किंगडम में सर्वप्रथम कुछ अधिकार एवं संरक्षण प्रदान किया गया। 1972 ई. में मैरी वोल्सटेनक्राफ्रट के द्वारा प्रकाशित पुस्तक पविडिंकेशन ऑपफ द राईट ऑपफ वूमेनय में महिलाओं के लिए सर्वप्रथम आर्थिक स्वतंत्राता एवं समान अधिकारों की बात कही गयी।

उस समय में एक विवाहित स्त्री को उसके परिवार की सम्पत्ति में कुछ भी वैधनिक अधिकार नहीं प्रदान किया गया था। तत्पश्चात् जॉन स्टुअर्ट मिल्स जो कि अपने सहपाठी हेरियट टेलर के विचारों से प्रभावित थे, उन्होंने पुरूषों के समान महिलाओं के लिए भी समान अधिकारों एवं एक समान राजनीतिक अधिकार की माँग की। भारत में महिलाओं को स्वतंत्राता एवं अधिकार प्रदान करने हेतु 19वीं एवं 20वीं शताब्दियों में मांगे जोर पकड़ने लगी। 1960 के दशक में विभिन्न नारीवादी सर्मथकों के संरक्षण में महिलाओं ने खुलकर पितृसत्तात्मक व्यवस्था के खिलापफ आवाज उठाना प्रारम्भ कर दिया। भारत में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करने हेतु 1974 में एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय को मुम्बई में खोला गया। जिसमें एक विशेष शैक्षणिक केन्द्र परिसर्च सेण्टर ऑपफ वूमेन स्टडीजय खोला गया। वहीं दूसरी तरपफ स्वतंत्राता पश्चात 1986 में भारत में भारतीय उच्च शिक्षण संस्थान यू.जी.सी. ने महिलाओं के अध्ययन हेतु अनेक शाखाओं को प्रारम्भ किया।

नारीवादः–

नारीवाद एक राजनीतिक–सिद्धान्त के रूप में स्त्री–पुरूष के समान अधिकारों की वकालत करता है। समाज में जो भी असमानताएँ देखने को मिलती है, उसका मौलिक कारण पितृसत्ता है। पितृसत्ता में यह कहा जाता है कि भारतीय समाज में पुरूषों को स्त्री की अपेक्षा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक रूप से श्रेष्ठ एवं अध्कि शक्ति प्रदान की गयी है। परन्तु नारीवादी इस असमानता को समाज से नेस्तनाबूद करके एक न्यायोचित समता मूलक समाज के गठन की बात करते है।

नारीवाद, समान्तया महिलाओं के साथ हो रहे शोषण उत्पीड़न एवं अत्याचार के खिलापफ एक एकीकृत आवाज का सर्मथन करता है। वर्तमान समय में नारीवाद के सन्दर्भ में समय–समय पर विभिन्न तरह के दृष्टिकोण प्रचलित है।

1.उदारवादी नारीवादः–

उदारवादी नारीवाद का विचार 1950–60 के दशक में कापफी लोकप्रिय हुआ। यद्यपि 17वीं शताब्दी में उदारवाद के जनक के रूप में जॉन लॉक का नाम प्रसि(है। जोकि व्यक्ति की स्वतंत्राता पर विशेष जोर देता है एवं सरकार को व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन में न्यूनतम हस्तक्षेप की वकालत करता है। उदारवादी नारीवाद में यह माना जाता है कि ईश्वर ने सभी को एक समान बनाया है। अतः लिंग के आधर पर समाज में स्त्री एवं पुरूष के मध्य विद्यमान असमानता का विरोध् करता है तथा उनके समान अधिकारों की मांग करता है। स्त्री हो या पुरूष सभी को एक समान अधिकार समाज में मिलने चाहिए। पितृसत्तात्मक व्यवस्था के अन्तर्गत पुरूषों को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धर्मिक एवं सांस्कृतिक रूप से जो श्रेष्ठता एवं प्रबल शक्ति प्रदान की गयी है, महिलाऐं भी उसकी हकदार है। लिंग के आधर पर शारीरिक एवं मानसिक रूप से की जाने वाली भेदभाव की मनाही करता है। उदारवादी नारीवाद के उफपर यह आक्षेप लगाया जाता है कि राजनीति एवं रोजगार के क्षेत्रा में महिलाऐं आज भी पुरूषों की प्रतिस्पर्ध में कापफी पीछे है। यह केवल वैधनिक ईकाई बनकर रह गया है।

2.रेडिकल नारीवादः–

सबसे पहले अमेरिका में रेडिकल नारीवाद का गठन सन् 1967 में किया गया। जोकि वामपंथी विचारधरा के अन्तर्गत माओवाद से बुरी तरह से ग्रसित था। रेडिकल नारीवाद में समाज में महिलाओं के साथ हो रहे शोषण, उत्पीड़न, दमन, अत्याचार, घरेलू हिंसा, बलात्कार एवं असमान व्यवहार के जड़ों की तलाश करता है। कौन सा ऐसा कारक है? जोकि इसके लिए जिम्मेदार है। इस दृष्टिकोण से महिलाओं में चेतना एवं जागृति का विकास हुआ। बच्चों के लालन–पालन, पोषण एवं देखभाल को लेकर प्रश्न उठने आरम्भ हो गये। वेश्यावृत्ति जैसे गोरख–ध्न्धे में शिकार महिलाऐं अपनी इच्छानुसार नही करती, बल्कि वहाँ पर भी इनका शोषण किया जाता है। राज्य एवं समाज में बाध्यकारी एवं शक्तिशाली कानून भी पितृसत्ता को बढ़ावा देती है। अतः यह सि(ान्त सम्पूर्ण संरचना की विरोधे है। रेडिकल नारीवादी सर्मथकों की आलोचना इस आधर पर की जाती है कि व्यवहार में यह केवल गोरी चमड़ी वाली मध्यम–वर्ग की स्त्रियों का ही सर्मथन करती है। जबकि तीसरी दुनिया अल्प विकासशील देशों की अश्वेत महिलाओं के उफपर ध्यान नहीं देती है।

3.समाजवादी नारीवादः–

समाजवादी नारीवाद के अनुयायियों का ऐसा मानना है कि पूँजीवाद और पितृसत्ता में चोली और दामन का रिश्ता है जोकि एक–दूसरे को मजबूती प्रदान करते है। पुरूष, वर्चस्व के रूप में पितृसत्ता की उत्पत्ति भले ही पूँजीवाद से पूर्व हुई हो, लेकिन वह पूँजीवाद को गतिमान रखने हेतु सहयोगी की भूमिका अदा करती है। वह पूँजीवाद द्वारा न केवल सर्मथन पाती है बल्कि मजबूत भी होती है।

उनका यह भी मानना है कि पूर्व एवं पश्चिम के देशों में पुरूषों को महिलाओं की तुलना में ज्यादा अहमियत प्रदान की गयी है। वे गुणवत्तापूर्ण ठोस एवं मजबूत वस्तुओं के उत्पादन में लगे रहते है। वहीं महिलाऐं केवल घरेलू कार्यों तक ही सीमित रहती है। जिनके कार्यों को मूल्यविहीन एवं ज्यादा महत्व नहीं प्रदान किया जाता है। जबकि पुरूष घर के बाहर उत्पादन के कार्यों में यदि पारिश्रमिक कार्य करता है तो महिलाऐं भी उसकी हकदार है, क्योंकि महिलाऐं न केवल अपने पति के लिए खाना बनाती है बल्कि परिवार में माता–पिता की देखभाल के साथ बच्चों के पालन–पोषण के कार्यों में भी लगी रहती है। जिसके लिए उन्हें किसी तरह का वेतन नहीं प्रदान किया जाता है और न ही उनके कार्यों को महत्व प्रदान किया जाता है। हमारे यहाँ के वामपंथी विचारधरा से सरोकार रखने वाले लोग महिलाओं के साथ निजी एवं सार्वजनिक कार्य–स्थलों पर हो रहे उत्पीड़न, दमन, शोषण एवं अत्याचार के सन्दर्भ में कहते है कि इसका मूल कारण जाति, लिंग एवं वर्ग को जिम्मेदार ठहराते है। दलित महिलाओं के साथ शोषण कैसे किया जा रहा है, इस पर वे ज्यादा पफोकस करते है। यह भारतीय समाज की विडम्बना है कि यहाँ पर जाति, लिंग, वर्ग, समुदाय, नस्ल, रंग एवं जन्म के आधर पर भेदभाव देखने को मिलता है।

मार्क्सवादी नारीवादः–

मार्क्सवादी नारीवाद का विकास मार्क्स के दर्शन से परिलक्षित होता है। इस विचारधरा के सर्मथकों का ऐसा मानना था कि समाज में महिलाओं के साथ हो रहे घरेलू हिंसा, उत्पीड़न, शोषण, दमन, अत्याचार, असमान वेतन इत्यादि समस्याएँ व्यक्ति अपनी इच्छानुसार नहीं करता बल्कि वह सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संरचना जिम्मेदार है जिसमें वह रहकर अपना गुजर–बसर करता है। यद्यपि समाज में महिलाओं के कार्यों को उतना महत्व नहीं प्रदान किया जाता जितना कि पुरूषों के कार्यों को समझा जाता है। मार्क्सवादी नारीवादियों का यह भी मानना था कि पुरूष एवं स्त्री के समान कार्यों के लिए एक समान वेतन नहीं प्रदान किया जाता है, जिसका कि वे कड़ी आलोचना करते है। 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में औद्योगिक पूँजीवाद के आ जाने के कारण उत्पादन की प्रक्रिया घरों में न होकर आधुनिक मशीनों के माध्यम से कारखानों एवं पफैक्ट्रीयों में होने लगा। जिसमें बच्चे, महिलाऐं एवं पुरूष सभी कंधे से कंधे मिलाकर कार्य करते थे, परन्तु 20वीं शताब्दी में वैश्वीकरण की प्रक्रिया आ जाने के कारण महिलाओं के उफपर नाकारात्मक प्रभाव पड़ा एवं उन्हें सस्ती मजदूरी दर तथा अपने कामों से हाथ धेना पड़ रहा है। मेहनतकश मजदूर वर्ग अपनी साकारात्मक उफर्जा एवं परिश्रम से अतिरिक्त मूल्य का निर्माण करते है जिसे पूँजीपति लाभ के रूप में हरण कर लेते है।

मार्क्सवादी नारीवाद की आलोचना इस आधर पर की जाती है कि वे महिला के अधिकारों के प्रति ज्यादा चिंतित नहीं थे। वह केवल इस बात की वकालत करने में लगे रहते थे कि पूँजीवाद को आगे बढ़ाने के लिए महिला श्रम का इस्तेमाल किस प्रकार से किया जाए।

राष्ट्रीय आंदोलनों में महिलाओं की सहभागिताः–

स्वतंत्राता के समय भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनों में महिलाओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया था। महात्मा गांधी के द्वारा चलाये गये विभिन्न तरह के आंदोलनों जैसेः– स्वदेशी आंदोलन, सत्याग्रह आंदोलन, असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन एवं दांडी यात्राा में महिलाओं की सहभागिता से इंकार नहीं किया जा सकता। गांधी के स्वदेशी आंदोलन के अन्तर्गत जहाँ एक तरपफ वह देश में निर्मित वस्तुओं का उपयोग करने पर बल दिया वहीं दूसरी तरपफ विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करके आंदोलन को सपफल बनाने में अपनी महत्ती भूमिका का निर्वाह किया। असहयोग आंदोलन में विदेशी शासन के साथ असहयोग एवं शराब की दुकानों को बन्द कराने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। महात्मा गांधी भी महिला के अधिकारों के मुद्दे पर हमेशा सक्रिय रहे एवं किसी भी तरह के समझौते के खिलापफ थे। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि स्वतंत्राता के पश्चात् भी महिलाओं के साथ हो रहे उत्पीड़न, दमन, शोषण, बलात्कार, घरेलू हिंसा, बाल–विवाह, खाप–पंचायतों के निर्णयों, इस्लाम में शरीयत के कानूनों से मुक्ति एवं स्वतंत्राता अब तक नहीं मिल पायी है। भारतीय समाज का पितृसत्तात्मक संरचना का निर्माण ही कुछ इस तरह से है कि आज भी महिला घर की चहार दिवारियों के अंदर कैद होकर घुट–घुट कर मर रही है। परिवार में लड़कों की शिक्षा पर विशेष पफोकस किया जाता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु उन्हें विलायत भेजा जाता है। वहीं दूसरी तरपफ शहरों को छोड़ दिया जाय तो गाँवों में लड़कियों को उच्च शिक्षा नाम मात्रा ही मिल पा रही है एवं अल्पायु में ही शादी कर दी जाती है। वर्तमान समय में देखा जाय तो देश की राजधनी दिल्ली में निर्भया कांड जैसी शर्मनाक घटना आये दिन देखने एवं सुनने को मिलती है। ऑनर किलिंग के नाम पर महिलाओं के साथ हो रहे राक्षसी व्यवहार का यह दस्तूर भारतीय समाज में आज भी जारी है। व्यवहारिक दृटि से देखा जाय तो इन सभी समस्याओं का मूलभूत स्रोत पितृसत्तात्मक संरचना ही है जिसमें आज भी भारतीय समाज मूसलाधर जड़ों की तरह जकड़ा हुआ है। इन सभी समस्याओं के प्रत्युत्तर में जब भी महिला संगठनों ने अपनी आवाज बुलन्द करने की कोशिश की पितृसत्तात्मक समाज के पैरोकारों ने भारतीय संस्कृति, परम्परा, अनुशासन एवं सभ्यता की दुहाई देकर उनके अधिकारों का केवल प्राचीन समय में ही नहीं बल्कि आज के समय में भी दोहन कर रहे है।

भारतीय राजनीति में महिलाओं की स्थितिः–

यह सत्य है कि स्वतंत्राता प्राप्ति के बाद भारत एक ऐसा राष्ट्र रहा है जहाँ पर आजादी के तुरन्त बाद ही महिलाओं को मताधिकार प्राप्त हो गया। वहीं दूसरी तरपफ पश्चिमी देशों जैसे ंस, इंग्लैण्ड एवं संयुक्त राज्य अमेरिका में महिलाओं को राजनीतिक मताधिकार प्राप्त करने हेतु एक लम्बी लड़ाई के दौर से गुजरने के बाद प्राप्त हुआ। परन्तु सबसे बड़ा प्रश्न यह उठता प्रतीत होता है कि भारतीय समाज में महिलाओं की जैसी स्थिति है, क्या वैसी ही स्थिति पश्चिम में देखने को मिलती है? इसका उत्तर बहुत ही सरल है कि नहीं। वर्तमान समय में देखा जाय तो संसद में हर बार महिला सशक्तीकरण के नाम पर लोकसभा एवं विधनसभा में 33÷ सीटों को महिलाओं के लिए आरक्षित करने का राग अलापा जाता है परन्तु संसद के पटल पर आज भी यह विध्येक लाल पफीताशाही की तरह पड़ा हुआ है। यद्यपि 73वें एवं 74वें संविधन संशोध्न के द्वारा पंचायतों एवं नगरपालिकाओं के चुनावों में महिलाओं के लिए 33÷ सीटे आरक्षित कर दी गयी है, परन्तु सच्चाई यह है कि उनके राजनीतिक सत्ता का उपयोग प्रायः परिवार के पुरूष लोग ही करते है। भारतीय संसद में आज भी उनकी नुमाइंदगी नगण्य है। जबकि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और इस बड़े लोकतंत्रा के ध्रातल पर आज भी महिलाओं के साथ खाईनुमा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक असमानता देखने को मिलती है। आजादी के 67 वर्ष बीत जाने के बाद भी महिलाओं को जो अध्किार मिलने चाहिए, वह उससे कोषों मील दूर है। यह केवल भारतीय समाज के लिए सबसे बड़ी विडम्बना नहीं है बल्कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्रा के उफपर सबसे गहरा ध्ब्बा है। आज भी यहाँ विशेष रूप से दलित एवं आदीवासी महिलाओं के साथ जाति, ध्र्म, नस्ल, रंग एवं क्षेत्रा के आधर पर भेदभाव किया जाता है।

भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थितिः–

प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय में भी महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति भारतीय समाज में दयनीय बनी हुयी है। पश्चिम की तुलना में भारतीय समाज में आज भी महिलाओं की स्थिति बदतर है। भारतीय समाज की सामाजिक संरचना का ताना–बाना ही कुछ इस प्रकार से बना है कि आज भी यहाँ पर महिलाओं के साथ बलात्कार, दहेज प्रथा, बाल विवाह, बहु–विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियाँ प्रायः हर दिन देखने को मिलती है। पश्चिमी उत्तर–प्रदेश में खाप–पंचायतों ने महिलाओं की स्वतंत्राता पर अंकुश लगा रखा है। यह किसी से छिपा नहीं है। जबकि भारत एक प्रजातांत्रिक देश है और प्रजातंत्रा की मूल आत्मा मानव की स्वतंत्राता, समानता, बन्ध्ुत्व में रची–बसी होती है। अतः भारतीय लोकतंत्रा के उफपर यह सबसे बड़ा प्रश्न है कि आज भी महिलाओं के साथ हो रहे भेदभाव के समाप्त करने में वह विपफल साबित हो रहा है। आर्थिक क्षेत्रा में भी महिलाओं की स्थिति पुरूषों की तुलना में समान कार्य हेतु महिलाओं को असमान पारिश्रमिक दिया जाता है। यहाँ तक कि बॉलीवुड की हिन्दी पिफल्मों से लेकर विज्ञापन के एडवरटाईजमेन्ट में यह खाईनुमा आर्थिक असमानता देखने को मिलती है। जबकि भारतीय संविधन के अनुच्छेद 39;4द्ध में स्त्राी एवं पुरूष दोनों को समान कार्य के लिए एक समान वेतन प्रदान करने का प्रावधन है। अतः यह न केवल भारतीय लोकतंत्रा के उफपर प्रश्न–चिन्ह लगाता है बल्कि भारतीय संविधन के उफपर भी सबसे बड़ा सवाल है कि ऐसी सामाजिक एवं आर्थिक असमानता भारतीय समाज में क्यों व्याप्त है?

सुझावः–

भारतीय समाज में महिलाओं के साथ हो रहे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धर्मिक असमानता को जड़ से समाप्त करने के सम्बन्ध् में निम्नांकित सुझाव दिये जा सकते है।

1.निजी एवं सार्वजनिक दोनों क्षेत्राों में महिलाओं के साथ कार्य–स्थल पर एक समान बर्ताव किया जाना चाहिए।

2.गर्वनमेंट क्षेत्रा की ही भांति निजी क्षेत्राों में भी महिलाओं के साथ गर्भधरण एवं बच्चे के पालन–पोषण हेतु अवकाश की सुविध सरकार को नियम एवं कानून बना कर यथाशीघ्र लागू कर देनी चाहिए एवं अवकाश के समय पर वेतन पाने का संवैधनिक अध्किार होना चाहिए।

3.निजी एवं सार्वजनिक दोनों क्षेत्राों में महिलाओं के साथ हो रहे संगीन अपराध्कि मामलों की सुनवायी न्यायालय के द्वारा यथाशीघ्र करनी चाहिए एवं अपराध्यिों को कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधन होना चाहिए।

4.बड़े–बड़े महानगरों की भांति गाँव में रहने वाली लड़कियों को उच्च शिक्षाप्रदान करने हेतु सरकार को नयी नीतियाँ बनानी चाहिए क्योंकि भारत के राष्ट्र–पिता महात्मा गांधी का कहना था कि पगाँवों के विकास के बिना, हम भारत के विकास की कल्पना नहीं कर सकते।य आज भी देश की 65÷ आबादी गाँवों में निवास करती है। महिलाओं को शिक्षित किये बिना हम भारत के विकास की कल्पना नहीं कर सकते।

5.दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता एवं चेन्नई जैसे बड़े महानगरों में महिलाओं की सुरक्षा हेतु विभिन्न तरह के हेल्प नम्बर सरकार के द्वारा उपलब्ध् कराये गये है। इसकी सुविध गाँवों एवं छोटे शहरों में रहने वाली महिलाओं को भी मिलनी चाहिए।

6.भारतीय पितृसत्तात्मक समाज में पुरूषों के समान ही महिलाओं को एक समान अध्किार मिलने चाहिए, तभी हम एक अच्छे एवं सुदृढ़ लोकतंत्रा की स्थापना कर सकते है। यदि लोकतंत्रा, स्वतंत्राता, समानता एवं बन्ध्ुत्ता के लक्ष्यों को प्राप्त करने में विपफल है तो भारत में एक समतामूलक समाज की स्थापना करना एक कोरी कल्पना के समान है।

7.आध्ुनिक संचार के संसाध्नों जैसे कि रेडियो, टेलीविजन, एपफ.एम. चैनलों, मोबाईल एवं अश्लील साहित्यों में परोसे जाने वाले चलचित्राों एवं संवादों ने महिलाओं की छवि को धूमिल किया है। अतः इस पर साकारात्मक प्रतिबन्ध् लगाने का प्रावधन होना चाहिए।

निष्कर्षः–

उपर्युक्त विवेचनाओं एवं विश्लेषणों से स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज में महिलाओं के साथ हो रहे असमानता एवं भेदभाव का मूल कारण पितृसत्ता ही है, जोकि भारतीय समाज में सदियों से अपनी जड़े जमा रखा है। इस प्रकार की असमानता एवं भेदभाव केवल पूर्व में ही देखने को नहीं मिलती है बल्कि पश्चिम की महिलाऐं भी इससे ग्रसित है। पफर्क सिपर्फ इतना है कि वहाँ पर इसके शोषण का प्रकार अलग तरह का है। इन सभी तरह की विषमताओं का सामना करते हुए आज की भारतीय नारी न केवल पुरूषों के साथ कन्धे से कन्ध मिलाकर भारतीय पितृसत्तात्मक समाज को चुनौती दे रही है, बल्कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रा में भी पुरूषों की प्रतिस्पर्धी बनकर आगे निकल चुकी है। उदाहरण के तौर पर कल्पना चावला एवं सुनीता विलियम्स जैसी महिला शख्यितों ने चाँद एवं मंगल पर पहुँचकर अपना परचम लहराने में सपफलता अर्जित की है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.आर्य, साध्ना, निवेदिता मेनन एवं जिनी लोकनीता (2001), फ्नारीवादी राजनीति, संघर्ष एवं मुद्दे, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

2.जोशी, डॉ. गोपा (2006), फ्भारत में स्त्राी असमानता, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

3.देसाई, नीरा एवं उफषा ठाकर (2001), फ्वूमेन इन इण्डियन सोसायटी, नेशनल बुक ट्रस्ट, वसन्तकुंज, नई दिल्ली।

4.जैक्सन, एलिजाबेथ (2010), फ्पफेमिनिज़्म एण्ड कन्टेमपोररी इण्डियन वूमेन्स राईटिंग, पालग्रेव मैकमिलन प्रकाशन, इंग्लैण्ड।

5.बिसवाल, डॉ. तपन (2008), फ्मानवाध्किार जेण्डर एवम् पर्यावरण, विभा प्रकाशन, दिल्ली।

6.बटलर, जुडिथ (1999), जेण्डर ट्रबल, फ्पफेमिनिज़्म दण्ड द सबवर्जन ऑपफ आइडेनटीटी, रूटलेज पब्लिकेशन, न्यूयॉर्क।

7.जैन, जसवीर एण्ड सुधराय (2002), फ्पिफल्म एण्ड पफेमिनिज़्म, इसेयज इन इण्डियन सिनेमा,, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।

8.पाडिया, चन्द्रकला (2002), फ्पफेमिनिज़्म ट्रेडिशन एण्ड मार्डननिटी, इन्स्टीट्यूट ऑपफ एडवांस स्टडी, पब्लिकेशन, शिमला।

9.चौध्री, मैत्रोयी (2004), फ्पफेमिनिज़्म इन इण्डिया, कली पफॉर वूमेन एण्ड वूमेन अनलिमिटेड, पब्लिकेशन, हौजखास, नई दिल्ली।